Name of the Teacher : **Dr. SREEKALA. K. I**

Designation : **Assistant Professor**
Department of Hindi
University College
Thiruvananthapuram

E- Mail Id : **jsrahul93@gmail.com**

SUMMARY REPORT OF THE WORK DONE ON MINOR PROJECT UGC REFERENCE NO. MRP(H)-1352/10-11 KLKE029/UGC SWRO KLKE029. TITLE OF THE MINOR PROJECT - "SIGNIFICANCE, INFLUENCE AND APPLICATION OF GANDHIAN PHILOSOPHY WITH SPECIAL REFERENCE TO SELECTED HINDI NOVELS".

अन्य साहित्यिक रूपों की अपेक्षा उपन्यास में समाज प्रचलित प्रवृत्तियों का चित्रण अधिक मिलता है। उपन्यासकार का लक्ष्य साहित्य में उच्च कर्तव्यनिष्ठा, गौरवपूर्ण भाव तथा सर्जना को खोजना ही नहीं, जनता के जीवन में नव प्रेरणा दिलाना भी है। जीवन की समग्रता को लेकर युगीन समस्याओं के विचित्र पक्षों को स्पष्ट करने का प्रयास सर्वप्रथम उपन्यासों में ही हुआ है।

गाँधीयुगीन साहित्य भी जीवनानुगामी है। गाँधीवादी आन्दोलन में उपन्यासकार यथार्थ जीवन का अनुभव कर रहे थे। गाँधीजी की सत्य और अहिंसा ने साहित्य जगत में कर्मण्यता, विचारों की स्वतंत्रता, जीवन की सरलता तथा निर्भीकता की घोषणा की। आदर्श और सिद्धांतों के लिए बलिदान की भावना स्पष्ट झलकती रहती है। उपन्यासकार इन्हीं दर्शनों से विशेष रूप से प्रभावित भी हुआ है।

गाँधीवाद वह वृक्ष के समान है, जिसकी जड़ें रामराज्य, ट्रस्टीशिप, हृदयपरिवर्तन, सत्याग्रह, सत्य और अहिंसा में निहित हैं। गाँधीवादी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सत्य, अहिंसा और प्रेम का मार्ग अनिवार्य मानता है। गाँधीवाद का ध्येय संबंधों की सार्थकता में नहीं, नैतिकता एवं धर्म में हैं। अर्थ की अपेक्षा सत्य को मानव जीवन का आधार

बनाना चाहिए। उपन्यासों में गाँधीवाद दो रूपों में दृष्टिगोचर होता है सामाजिक समस्याओं के रूप में तथा राष्ट्रीय समस्याओं के रूप में।

गाँधीजी का दर्शन तो भारतीय संस्कृति से स्वीकृत ज्योति है। इसका संबंध पुराणों, वेदों, उपनिषदों तथा अन्य दार्शनिक ग्रन्थों से हैं। पर गाँधीजी ने इन सिद्धांतों को दर्शन के तौर पर नहीं, व्यावहारिक तौर पर इनका इनका सरलीकरण किया है। बहुत ही सरल पक्षों को मानवता केलिए उपयोगी सिद्ध किया है। यही उस महापुरुष की खूबी है। गाँधीजी ने भी स्वयं कहा है कि वे किसी नवीन विचारधारा को प्रस्तुत नहीं करते हैं। भारत के धर्म, दर्शन, साहित्य और समाज में इसकी परंपरा अतीत काल से देखी जा सकती है। गाँधीवाद के मूल तत्व और सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्या, अस्पर्शता, सादगी, स्वदेशी, हृदयपरिवर्तन, विकेन्द्रीकरण, ट्रस्टिशिप एवं सत्याग्रह हैं। गाँधीवाद के रचनात्मक सूत्र सांप्रदायिक एकता, स्त्रियों की उन्नति, मद्यपान निषेध एवं खादी का प्रचार आदि हैं।

सत्य और अहिंसा गाँधीवादी जीवन दर्शन की आधारशिला है। अहिंसा और प्रेम में अटूट संबंध है। प्रेम का शुद्ध एवं व्यापक रूप अहिंसा है। सत्य हमारे जीवन का केन्द्रबिन्दु है। सत्य के बिना जीवन अपूर्ण होता है। 'ईश्वर सत्य है' के स्थान पर गाँधीजी ने 'सत्य ही ईश्वर है' माना है। इस सत्य की प्राप्ति के लिए निस्वार्थ जीवन और तपस्या अनिवार्य है। सत्य के लिए मन, कर्म, वचन तीनों का सामंजस्य भी आवश्यक है। अहिंसा ही सत्य तक पहुँचाने की एकमात्र कडी है। समाज परिवर्तन के लिए हिंसा की आवश्यकता नहीं है। वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है। इससे जीवन के मूल्यों में स्थायी परिवर्तन आ जाता है।

सादा जीवन तथा उच्च विचार को अपनाने से आधुनिक जीवन की समस्यायें मिट जाती है, क्योंकि जीवन सादा हो तो गलत तरीकों को अपनाने की आवश्यकता ही नहीं होती है।

'शरीर श्रम' जीवन का शाश्वत नियम है। समाज से वर्गभेद खत्म होती है तथा ईर्ष्या, द्वेष, ऊँच-नीच की भावना समाप्त होती है। इससे व्यक्ति के कल्याण के साथ सामाजिक कल्याण का मंगलमय स्वरूप प्रकट होता है।

स्वदेशी से मतलब व्यक्ति अपने समीप के वस्तुओं का उपयोग ही है। स्वदेशी माल उपयोग करने का व्रत ले लिया जाए तो हमारी अर्थव्यवस्था बहुराष्ट्र कंपनियों के चंगुल में न फंस जाता। इससे ग्राम खुशहाल हो जाएँगे, वहाँ के गरीबी, बेरोज़गारी जैसी समस्याओं का समाधान भी हो जाएगा। अतः स्वदेशी व्रत का पालन से मनुष्य की संकल्पना शक्ति बढ़ती है तथा समाज की अर्थव्यवस्था भी टिकाऊ बनी रहती है। गाँधीजी का स्वदेशी व्रत संकीर्णता, घृणा, स्वार्थ, प्रतिद्वंद्विता, भौतिकता आदि दोषों से मुक्त है।

गाँधीजी ने अपना संपूर्ण जीवन सर्व धर्म समभाव केलिए अर्पित कर दिया था। गाँधीजी का मत है कि धर्म व्यक्ति विश्वास का विषय है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने अनुसार जीने का अधिकार है। वे सभी धर्मों के बीच आपस में समन्वय रखने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी गाँधीजी ने आवश्यक कदम उठाया है। नयी तालीम, बुनियादी शिक्षा, मातृभाषा की शिक्षा आदि को उन्होंने महत्व दिया है। शिक्षा के साथ हमारी विविध विकास योजनाओं को जोड़ने की मौलिक समस्या का व्यावहारिक हल इस बुनियादी शिक्षा पद्धति में है।

इसके अलावा, अछूतोद्धार, मद्य निषेध, खादी, ग्रामीण कुटीर उद्योग, ग्राम सफाई, वयस्क शिक्षा और साक्षरता, नारी का उद्धार, मातृभाषा के प्रति प्रेम, आर्थिक समानता, आदिवासियों की सेवा, किसान, मज़दूरों का संगठन आदि का भी उल्लेख किया है। इन कार्यक्रमों को आज के कार्यक्रमों का आधार बनाया जाए तो अपेक्षित लाभ होगा।

गाँधीवादी आन्दोलन से प्रभावित प्रेमचन्द के प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान, गबन आदि उपन्यास विशेष महत्वपूर्ण हैं। प्रेमाश्रम में प्रेमशंकर, रंगभूमि के सूरदास तथा कायाकल्प के अमरकान्त में गाँधीजी का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। समय-समय पर प्रेमचन्दजी ने असत्य पर सत्य की विजय, हृदय परिवर्तन, सत्याग्रह, अछूत आन्दोलन, चर्खा और कर्घा, नौकरशाही का दमन, बेकारी की समस्या, नारी जागरण, स्वदेशी प्रभाव, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, किसान और गज़दूर आन्दोलन, ज़मीनदारों का शोषण आदि अनेक घटनाओं को चित्रित किया है।

यशापालजी के अधिकांश उपन्यासों में भी गाँधीवादी दर्शन के विविध आयाम देख सकते हैं। देशद्रोही उपन्यास का मूल स्रोत कांग्रेस की गाँधीवादी नीति और उनके सिद्धांत हैं। उपन्यास का विश्वनाथ मज़दूरों के पक्ष में मिलकर हड़ताल के लिए प्रेरणा देते हैं। दादा कामरेड उपन्यास का हरीश भी शोषण की वृत्ति को हड़ताल के माध्यम से विरोध करता है।

आधुनिक विश्व में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में अनेक समस्यायें हैं। विविध सरकारों द्वारा इन्हीं समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करते रहते हैं। लेकिन इससे कोई समाधान नहीं निकलता है। केवल गाँधी दर्शन ही आशा की किरण है।

केवल हमारे देश में ही नहीं, संपूर्ण विश्व में गाँधी दर्शन ही समस्याओं के समाधान केलिए एकमात्र कुंजी है।

आज सरकारी स्तर पर अनेक योजनाओं द्वारा ग्राम पुनःनिर्माण का प्रयत्न हो रहा है। भारत को स्वतंत्रता के इतने सालों के बाद भी इन स्वदेशी योजनाओं के निर्माण में असमर्थ रहे हैं। ऐसी स्थिति में गाँधीवादी मॉडल जन से जुड़ा हुआ एक मौलिक सत्य है, जिसका मूल ग्रामीण अनुभव एवं अध्ययन पर आधारित है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, अंतर्राष्ट्रीय सामंजस्य, राष्ट्रीय सुरक्षा आदि की दृष्टि से देखने पर गाँधी का मॉडल ही हमारे लिए उचित, अनुकरणीय प्रतीत होता है।

विभिन्न सरकार द्वारा आयोजित स्वच्छ भारत, ग्राम योजना, धन योजना, जनधन योजना, बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं आदि का नींव यह गाँधीवादी सिद्धांत ही है।

आजकल हमारे देश में स्थान-स्थान पर होनेवाले दंगे इस बात का प्रमाण है कि हमारे यहाँ स्वधर्म समभाव या सांप्रदायिक एकता की आवश्यकता बढ़ रही है। गाँधी दर्शन ही आज राष्ट्र एवं विश्व में धार्मिक कट्टरता, विद्वेष, सांप्रदायिक दंगे, आतंकवाद, पृथकता जैसी समस्याओं से संत्रस्त मानव की रक्षा कर सकता है। यह दर्शन तो संकीर्णता और विभाजन को समाप्त कर एकता प्रदान करता है। गाँधीजी का सिद्धांत मानवता को गरीबी, अस्पृश्यता, उत्पीड़न, शोषण से मुक्ति दिलाने की एकमात्र कुंजी है। गाँधीजी हर एक भारतीय की स्पन्दन को पहचानते थे। यह भी नहीं यह दर्शन प्रत्येक की आँसू पोंछता है। इसलिए यह दर्शन आज भी प्रासंगिक है और कल भी।